ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14 Vol.-5, No.-I, PP-174-176, YEAR JUNE 2016

कृषि और भूमंडलीकरण

❑ डॉ0 भोलेन्द्र प्रताप सिंह

भूमंडलीकरण के दौर में तीसरी दुनिया के दे ाों के वनों एवं वन आधारित प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता गया है। इस परिप्रेक्ष्य में इन दे ाों सहित भारत के कृषि क्षेत्र एवं फसल पद्धति से संबंधित निम्न परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं–

1. **नगदी फसलों पर बल–** सरकारी नीतियों ने उच्च ऊर्जा आधारित कृषि एवं फसल पद्धति को प्रोत्साहित किया है– उदाहरण के लिए दक्षिणी भारत के प ि चमी घाटों में (कोडागू क्षेत्र) कॉफी, रबड़ एवं नारियल की खेती बढ़ी है।

2. **कम संख्या के फसल संयोजन पर बल–** भारत के उत्तरी मैदानों के उत्तर प ि चमी क्षेत्रों में, जहाँ हरित क्रांति सफल रही है, वहाँ गेहूँ और चावल नगदी फसल की तरह उपजाया जा रहा है। इस प्रकार इन क्षेत्रों में कृषि बाजारोन्मुख होती जा रही है।

3. **बढ़ती आय विषमता–** छोटे एवं बड़े किसानों के बीच आय की असमानता बढ़ती जा रही है। ग्रामीण समाज धनी एवं गरीबों में ध्रुवीकृत होता जा रहा है। नियोजकों के लिए यह एक गहरी चिन्ता का विषय है।

4. **भूमि एवं वनों का ह्रास–** भूमि के असमपोषणीय दोहन एवं जंगली लकड़ियों के अति दोहन से न सिर्फ वन संपदाओं का तेज ह्रास हो रहा है बल्कि भूमि की गुणवत्ता भी तेजी से घट रही है। नये किस्म के खर–पतवारों के आक्रमण से जैव–विविधता मृदा अपरदन की समस्या बढ़ी है।

5. **जैव–विविधता का ह्रास–** अन्यान्य कारणों से प्राकृतिक जैव–विविधता एवं पारिस्थितिकी तंत्र का तेज विना ा जारी है।

6. **जलवायु परिवर्तन–** भू–उपयोग में भारी परिवर्तन वनों की कटाई तथा उच्च स्तरीय हरितगृह प्रभाव जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारण हैं। प्रादे ि ाक एवं राष्ट्रीय स्तरों पर भूमंडलीय तापन का क्या प्रभाव है यह अभी तक पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं है। लेकिन ऐसी भविष्यवाणी है कि तापमान बढ़ने के कारण कुछ प्रदे ाों में वर्षा की मात्रा में 50 प्रति ात तक की वृद्धि आयेगी। उष्कटीबंधीय चक्रवातों एवं चक्रवातीय वर्षा के कारण छोटी अवधि में भीषण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होगी जिससे अंततः जैव–विविधता एवं कृषि व्यवस्था में अतिवादी परिवर्तन आएंगे।

संसाधनों का उपयोग– नागरिकों द्वारा उठाये गये कुछ समझदार कदमों से प्राकृतिक संसाधनों के क्षय को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। इनमें से कुछ कदम निम्न प्रकार हैं–

1. लोगों को अपने वै ि वक समझ एवं मूल्य व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहिए। उन्हें इस बात का एहसास होना चाहिए कि प्राकृतिक संसाधन नियत और सीमित हैं।

2. लोगों को सोचना चाहिए कि विकास एवं पर्यावरण दोनों ही सहगामी हैं। दूसरे भाब्दों में विकास वही और उतना ही सही है जो भविष्य की आर्थिक खु ाहाली की गारंटी दे सकें।

3. वि व के लोगों को अपनी आज की आव यकताओं के साथ–साथ आने वाली पीढ़ियों की आव यकताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए।

4. आत्मनिर्भरता के लिए लोगों को उचित

❑ असि0 प्रोफे0,, भूगोल विभाग, आर0एन0सी0 महाविद्यालय, सैदपुर, बलिया (उ0प्र0), भारत

तकनीक का उपयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए गॉव के लोगों को अपनी बिजली आव यकता के लिए सौर ऊर्जा पर निर्भर करना चाहिए।

5. विकास ील दे ाों में लोगों को जनसंख्या नियंत्रण पर वि ोष ध्यान देना चाहिए। इन दे ाों में महिला उत्थान, ि ाक्षा, स्वास्थ्य, परिवार नियोजन एवं सामाजिक सेवाओं पर ध्यान देने की आव यकता है।

6. विकास ील दे ाों में भूमि के समान वितरण की द ाा में और कदम उठाये जाने चाहिए।

7. विकसित दे ाों में लोगों को अति–उपभोग की मूल्य व्यवस्था को त्यागना चाहिए तथा संपोशणीय उपभोग की संस्कृति अपनानी चाहिए।

8. विकसित एवं विकास ील दे ाों के बीच संपत्ति का निम्नीकरण का मूलभूत कारण है। सतत् विकास की अवधारणा के प्रतिपादकों का मानना है कि इसका यह अर्थ नहीं है कि धनी दे ाों द्वारा गरीब दे ाों को नगदी धन दे दिया जाए। इसके लिए इनके द्वारा कुछ उपाय सुझाए गए हैं, जैसे– विकसित दे ाों के ऋण देने वाले संस्थानों द्वारा विकास ील दे ाों के ऋणों को माफ करना एवं विकास ील दे ाों द्वारा प्राकृतिक संरक्षण, राष्ट्रीय उद्यान एवं अन्य संरक्षण संबंधी कार्यक्रमों को लागू करने के लिए उनके ऋणों के कुछ भाग को माफ करना इत्यादि।

पर्यावरणीय संरक्षण– विज्ञान हमारी सभी समस्याओं का निदान कर देगा हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए। हमारे निर्णयों एवं आव यक क्रियाओं का एक बहुत बड़ा भाग विज्ञान की परिधि के अन्तर्गत नहीं आता जैसे– मूल्य, नैतिकता, द ान इत्यादि। पर्यावरणीय समस्याओं काअगर समाधान है तो वह ि ाक्षा और क्रिया में है।

हममें से प्रत्येक द्वारा लिए गए प्रतिदिन के छोटे–बड़े निर्णयों का सामूहिक रूप से भारी प्रभाव पड़ सकता है। पर्यावरणीय संरक्षण एवं सतत् विकास की दि ाा में हम ऐसे बहुत सारे कदम उठा सकते हैं–

जन–परिवहन व्यवस्था का उपयोग करें तथा साइकिल से एवं पैदल चलें।

2. ज्यादा बिजली खपत करने वाले बत्तियों के बदले कम ऊर्जा खपत करने वाले बत्तियों का प्रयोग करें। आव यकता न होने पर बिजली से चलने वाले घरेलू उपकरणों को बंद कर दें।

3. कम ऊर्जा खपत करने वाले उपकरणों एवं कारें खरीदें। अगर ये महंगे भी हैं तो आने वाले समय में ये बड़ी बचत करेंगे।

4. अपने घरों को मौसमी प्रभावों के प्रति बेहतर ढंग से सुरक्षित रखें। गर्मी में 'थर्मोस्टैट' को अपेक्षाकृत उच्च और जाड़े में निम्न रखें।

5. सौर पवन ऊर्जा संयत्रों की स्थापना पर बल दें।

6. पुनः उपयोग में लायी जा सकने वाली बैटरी खरीदें।

आहार

1. जिन क्षेत्रों में कीटना ाकों का उपयोग हो रहा हो वहां के उत्पाद कम से कम खायें। विकसित बंदरगाहों एवं खाड़ियों के समुद्री उत्पाद कभी नहीं खायें।

2. हमारे आहार विकल्प पर्यावरण को ऐसे प्रभावित करते हैं, इस पर ध्यान दें। आहार श्रृंखला में आने वाले नीचे के आहारों का उपभोग करें तथा उन क्षेत्रों के आहार कम से कम खायें जहां खतरे वाले प्रजाति (जैसे– वर्शा वन) का विना ा किया गया हो।

3. बगीचा लगायें।

4. ऐसा आहार खरीदें जिनकी पैक्जिींग के लिए उपयोग में लाए गए पदार्थों का पुनः उपयोग किया जा सके।

जल

1. घरेलू उपयोग में जल को ज्यादा– से– ज्यादा बचत करने वाले उपकरणों एवं उपायों का उपयोग करना चाहिए।

2. घरेलू बगीचों को जल्दी–जल्दी नहीं बल्कि एक समयांतराल पर अच्छी तरह सफाई करनी चाहिए। उन पर सूखा–सहिष्णु हरित आच्छादन बेहतर है।

3. स्नान कम पानी से करें।

4. बर्तन साफ करने वाली म ीनों को पूरी भरी हुई स्थिति में ही चलायें।
5. फुटपाथ आदि पर पक्कीकरण ऐसा करें कि पानी नीचे रिस सके।

विषैले पदार्थ एवं प्रदूषक

1. फर के आस–पास से विशैले पदार्थों (पुराने डब्बे, इंजन ऑयल इत्यादि) को हटाकर उन्हें इन पदार्थों के प्राप्ति स्थल तक पहुँचाएं।
2. उत्पादों को उन पर छपे 'लेबल' पढ़कर सबसे कम विषैले पदार्थों को ही खरीदें।
3. कीड़ों को भौतिक रूप से मारें, उन पर कीटना ाक नहीं छिड़कें।
4. वैसे कपड़े खरीदें जिन्हें 'ड्राईक्लीनिंग' कम–से–कम नहीं करनी पड़े।

अपशेष नियंत्रण

1. अखबार, डब्बें, भी ो एवं प्लास्टिक के उत्पादों का पुनः प्रयोग के लिए दें।
2. दोबारा भरे जाने और प्रयोग में लाये जाने लायक उत्पाद खरीदें।
3. साफ–सफाई के लिए कागज के (टि यू पेपर) के बदले पुराने कपड़ों का प्रयोग करें।
4. घरेलू सामान की खरीद के लिए पुनः उपयोग में लाये जाने वाले थैलों का उपयोग करें।
5. समुद्री कछारों, तालाबों एवं अन्य जल–स्थलों की सफाई अभियान में स्वेच्छा से श्रमदान करें।

जीवन एवं पर्यावरण संरक्षण

1. वृक्ष लगायें।
2. खाली स्थान को संरक्षण करें।
3. क्लोरो–फ्लोरो–कार्बन का उपयोग कम–से–कम करना।
4. उन संगठनों का बहिश्कार करना जो पर्यावरण संरक्षण के उचित को नहीं अपनाने या उनका उल्लंघन करते हैं।
5. गंदगी नहीं फैलायें तथा पर्यटक स्थलों पर कूड़े को कूड़ेदान में ही डालें।

अन्य बातें

1. अपने काउंसलर, विधान सेवक को लिखें एवं मिलें।
2. 'ग्रीनपीस', 'चिपको आंदोलन' जैसे पर्यावरण संरक्षण से जुड़े संगठनों से जुड़ें।
3. पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर अपने दोस्तों से बातचीत करें।
4. अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद खरीदें। इसकी बेहतर रख–रखाव करके लंबे समय से उपयोग में लायें।
5. सूर्योदय या सूर्यास्त के समय समुद्री कछारों पर भाांति से बैठें।
6. पढ़ें और सुनें।
7. परिणाम के बारे में धनात्मक सोच विकसित करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Agarwal, A., 1997, Homicide by Pesticides, Centre for Science and Environment, New Delhi.
2. Ahuja, R., 2007, Social Problems of India, Jaipur, Rawat Publications.
3. Asada, T., 1982 Earthquake Prediction Techniques, Tokyo, University of Tokyo Press.
4. Attarchand, 1987, Poverty and Under-development, Delhi: Gian Publishing House.
5. Aziz, A., 1992, 'Cities and Environmet' in Raza Mehdi (ed.) Development and Ecology, Jaipur, Rawat Publications.
6. Berger, W.H., et.al. Abrupt Climatic change, Boston, D. Radiel Dordrecht.

*****